मधुबन के कुमारों का आह्ववान

जगतनियन्ता की बेजोड़ रचना,जानीजाननहार की पहली पसंद,परवरदिगार की अद्भुत नजीर,अन्तर्यामी की बहुमूल्य अमानत,विधाता की अनमोल कृति,वरदाता का दुर्लभ वरदान,भगवान का बेशकीमती तोहफा,दयानिधान की बेमिसाल निधि, कृपानिधान की मनमोहक छवि,करूणासिंधु की अपार करूणा, भाग्यविधाता एवं जगदजननी की तपोस्थली, अतिविशिष्ट भूमि ''मधुबन''। जिसकी महिमा जितनी भी की जाये वह कम ही होगी। जिसे स्वयं भगवान ने चुना,सवॉंरा,वहॉं पर कर्म करके कर्म करने की कला सिखलायी। आदिदेव ब्रह्मा एवं जगत अम्बा सरस्वती ने जहॉं तपस्या की और विश्व के पिता परमपिता ने जिसे विश्व शोकेश बनाया। एक ओर देखो जहॉं कलियुग के अन्त में चारों ओर विकारों की आग धधक रही हो,भ्रष्टाचार की महामारी हर मन तक घर कर चुकी हो,आधुनिकता जहॉं अपरिहार्य बन चुकी हो, भौतिकता जहॉं रगों में पहुँच चुकी हो,इंसानियत जहॉं से पलायन कर चुकी हो,सच्चाई जहॉं डर से दुबक कर किनारे बैठ चुकी हो, मानवता जहॉं दर्द से कराह रही हो,ईमान जहॉं खुले आम बिक रहा हो,चरित्र जहॉं बेमानी लग रहा हो,धर्म जहॉं अस्तित्वविहीन बन चुका हो, ऐसे नाजुक समय में माया के स्वर्णिम रूप को पहचान,उसकी चकाचौंध को पहचान,त्याग की नई परिभाषा लिखने वाले,वैराग्य का नया इतिहास बनाने वाले,सन्यास की पराकाष्ठा पर जाने वाले,अदृश्य,अनोखे गुप्त रूप में आये परमात्मा को न सिर्फ पहचाना बल्कि उसको जाना और उसकी मानकर उसके ही बन गये,और उसकी मत को जीवन का परम उद्देश्य बना संसार की करूण दशा देख उसकी दिशा बदलने के लिए अपनी सब आशायें समर्पित करने वाले, मधुबन पावनतम भूमि के पवित्र कुमार– जरा सोचो ? तुम्हें किसने चुना है? जो त्रिकालदर्शी है,जानीजाननहार है,तीनों लोकों को सिर्फ जानने वाला ही नहीं, बल्कि उसका मालिक भी है, जो अन्तर्यामी है,सारे संसार के करीब 7 अरब लोगों में से अँगुलियों पर गिनती करने वाले मुट्ठी भर लोगों को चुना है, जरा गौर करो, तुम पर किसकी नजर पड़ी है? किसने तुम्हारे सिर पर हाथ रखा है? जो सर्वशक्तिवान है! सोचो तो सही ! उसने तुम्हें कहॉं रखा है! मधुबन ! यह एक ऐसा स्थान है जहॉं कोई विकारी हवा नहीं, जहॉं गर्मी का जलजला नहीं ,यह एक ऐसा सेफ संसार है जहॉं दिन रात तपस्या की प्रचण्ड अग्नि अनवरत जल रही है,जहॉं त्याग का परिधान पहन

वैराग्य सजा खड़ा है, उमंग–उत्साह की उर्जा जहाँ पवन की तरह बह रही हो,जहाँ विश्व कल्याण कण–कण में बसा हो,पवित्रता जहाँ आकाश की तरह अनन्त,उच्च एवं परिशोधित शिखरीय है, मेरे भाई ये वह जगह है जिस पर सारे संसार की नजर है। आप सारे संसार को देख रहे हो या न देख रहे हो, या ये मान रहे हो कि हमें कोई या संसार देख रहा है या नहीं देख रहा है, परन्तु कोई तो क्या सारे संसार के साथ भगवान भी तुम्हें अच्छी तरह से देख रहा है, बल्कि संसार तो बड़ी कातर नजर से इस उम्मीद के साथ आप पर अपनी नजरें टिकाये है, कि कहीं से शफा मिलना है तो यहीं से,इन्हीं से, अगर कोई हाथ थामने वाला है तो यही अल्लाह लोग हैं,अब जरा सोचो ! भगवान ने तुम्हें यहाँ क्यों रखा है? क्या सोच कर भगवान ने विश्व शोकेश में आपको सैम्पल के रूप में रखा है? जब भी कोई बड़ा व नया कार्य किसी को दिया जाता है तो और सब बातों से फ्री एवं निश्चिन्त किया जाता है और पूरी तरह एकान्त का अवसर दिया जाता है,वैसे ही भगवान ने भी आप लोगों की हर छोटी–छोटी बातों की अच्छी से अच्छी व्यवस्था कर रखी है, बाकी हर उस चीज से आपको मुक्त कर रखा है जिसमें आपका समय, शक्ति और संकल्प लगाना पड़े, आपको किसी और के लिए तो क्या अपने लिए सोचने की भी जरूरत नहीं, आप सिर्फ और सिर्फ अपनी तपस्या के द्वारा अपनी स्थिति को बनाये, बाकी का काम के लिए मैं बैठा हूँ, तो सोचो ! आपको ऐसी व्यवस्था किस महान कार्य के लिए भगवान ने करायी होगी? दुनिया में अगर एक नजर आप डालकर देंखें कि संसार की गाड़ी कैसे चल रही है? तो पायेंगें कि संसार की हालत और हालात दोनों बद से बदतर होते जा रहे हैं, जितना सुधारने का किसी भी तरह प्रयत्न किया जा रहा है,उतना ही वो खराब होता जा रहा है,आप तो सोच भी नहीं सकते कि संसार की ऐसी दुर्दशा से गुजर रहा है, और मानव जो सर्वश्रेष्ठ प्राणी था सर्वगुण संपंन था आज वो किस हालात से गुजर रहा है,क्या वो कर रहा है और क्या–क्या उसके साथ हो रहा है,क्या–क्या उसके पास था और आज वह किस–किस चीज के लिए तरस रहा है? जो देश सोने की चिड़िया कहलाता था, आज उसके खाने के लाले पड़े हैं,जहाँ घी–दूध की नदियाँ बहती थी, वहाँ आज विषय–विकारों की हवायें बह रही हैं,जहाँ शेर हिंसक जानवर में भी प्रेम एवं माधुर्य की वृति चलती थी, पर आज वहाँ मानव की वृति इतनी हिंसक एवं खुंखार जैसे शेर से ट्रांसफर करवा ली है, जो जीवन मूल्यों से सजा हुआ था, आज वहसीपने से

तार–तार हो गया है,सूरत में स्मार्टनेस तो भरपूर है, पर व्यवहार में स्वीटनेस से कोसों दूर हैं। मेरे भाई आप इतने पवित्र स्थान पर पवित्र जीवन और पवित्र संगठन के बीच में रहते हो, इसलिए शायद आप सोच नहीं सकते, पर दिनोंदिन दशा और दिशा इतने बद से बदतर होते जा रहे हैं कि इनको सुधारने के लिए सबने हाथ खड़े कर लिए हैं, अब एकमात्र सहारा भगवान और भगवान के द्वारा निमित्त बनाये हुए भाग्यवान कुमार ही हो सकते हैं, क्योंकि कुमार भगवान के अति उर्जावान एवं निर्बन्धन,त्यागी लोग हैं, उसमें आप तो अति भाग्यवान आत्मायें हैं, मेरे प्रिय भाई इस जड़जड़ीभूत जहान में आप ही ये भागीरथ कार्य कर सकते हैं, क्योंकि आपमें डबल उर्जा तो है ही साथ–साथ सर्वशक्तिवान का भी साथ है,बेजोड़ संगठन का भी सहयोग है,और भाइयों ये कार्य अगर अभी नहीं किया गया तो आगे कभी भी नहीं हो सकता और आप लोग किस सोच वा किस आशा में बैठे हो कि कहीं कोई मसीहा आयेगा और सारी समस्यायें जादू की तरह छू मन्त्र कर देगा,मेरे भाई इस भ्रम में मत रहिये कहीं कभी कोई मसीहा या जादूगर आने वाला नहीं,मेरे भाई संसार को इस हालात में ले जाने वाला कौन है? सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने के नाते इसके पतन का कारण मानव ही है,उसमें भी खास हम ही लोग हैं,और परिवर्तन के लिए हम किसी और की तलाश में हैं क्या मा0 नॉलेजफुल को पलायन करना शोभा देता है? नहीं तुम तो ऐसे स्थान पर हो,तुम्हें चयनित करने वाला कौन है? किसने तुम पर विश्वाश किया है? अगर कभी सफलता नहीं भी मिलती तो पुरूषार्थ के पथ पर पहला कदम रखते ही पीछे के सारे संस्कार पीछा नहीं छोड़ देते, जिसके कारण अगर कभी सफलता थोड़ा लेट भी हो सकती है पर दिलशिकस्ती क्यों?

2– हमें ऐसा लगता है कि तीन खास कार्यों के उद्देश्यों से जानीजाननहार ने तुम्हें यहाँ के लिये चयनित किये होंगें। एक तो यह साकार कर्मभूमि है पर साकार की अनुभूति अव्यक्त में आने वाले कैसे करेंगें? इतना तो उनमें सामार्थ्य नहीं कि वह अव्यक्त की फीलिंग को साकार में कनवर्ट कर लें, उसके लिए बाबा ने साकार प्रतिनिधि बना कर रखा होगा! ज्ञान किसी को समझ में आया हो या न आया हो, पर भावना व स्नेह अन्त तक भी व्यक्ति के मानस पटल पर स्लाइड की तरह घूमता रहता है, सिर्फ वह घूमता ही नहीं है पर अन्तस की गहराई में ऐसे समाहित हो जाता है कि उसे किसी भी तरह से अलग नहीं किया जा सकता है। मेरे भाई ! मधुबन में जो भी कैसे भी करके आते हैं उन्हें साकार की अनुभूति कराना इस परम

उद्देश्य के लिए ही शायद विधाता ने चुना होगा। साकार भूमि में साकार की अनुभूति कराना ही है। तुम्हारा चरित्र गुणों की गरिमा बन उनके मन में मूल्यों की जीवन्त खुशबू भर दे। तुम्हारी रूहानियत भरी नजर अलौकिक प्रेम का विमल सिन्धु बन प्यार के सूखे को सुख का बरसता सावन बन जाये। तुम्हारा जीवन उर्जा का पर्याय बन दिलशिकस्त हो चुके लोगों में उत्साह का अनन्त संचार कर दे। खुशी का अविरल प्रवाह बन मुरझाये मन में उमंगों की बहार–ए–बसंत ला दे। तुम्हारा तेज पावनता का प्रखर सूर्य बन उनके जीवन पथ पर बिखरे अज्ञान के हर तिमिर को उजाले से भर दे। तुम्हारा सानिध्य वैराग्य का रस घोल उनके जेहन में साधना का दीप जला दे। तुम्हारी चलन साकार के अनुभवों का श्रेष्ठतम् दर्पण बन उनको प्रभुवर के साथ प्रियवर आदि पिता की छायाप्रति का एहसास कराये। उन्हें आकार का ख्याल महसूसता के नेत्र से साकार होते दिखाई दे। साकार ने अपनी गद्दी पर बड़ी दादी को योग्यतम वारिस देखकर बैठाया होगा? जिसका उदाहरण कई लोगों के मुख सुना,एक बार एक दादी कह रही थी कि कुमारिका ने कमाल का काम किया है कि जो किसी को साकार की कमी नहीं होने दी,सबको एक संगठन में प्रेम से बाँध कर रखा। अब यह संकल्प साकार करने की तुम्हारी चुनौती है। इसी प्रकार तुम्हें भी भगवान ने क्यों यहाँ रखा?

यह ऐसी भूमि है जिसको प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ शुद्धता भी प्राप्त है,जिसका एक कारण यह कि यहाँ आबादी बहुत ही कम होना,जिससे भ्रष्टाचार की आग इतना नहीं सुलग रही,दूसरा कारण भगवान के आने के पहले ऋषियों– मुनियों,तपस्वियों ने अपने तप से इस धरती को शुद्ध किया है,राजा गोपीचन्द,राजा भर्तहरि के वैराग्य ने बल भरा,अनेक यादगार मंदिरों के वायब्रेशन ने इस धरा को इतना दूषित नहीं होने दिया। मेरे भाई तुम वहाँ रह रहे हो, सोचो किस लिए? अपने उस महान कार्य को याद करो,जगाओ अपने सुषुप्त शक्तियों को,याद करो अपने आरम्भिक अतीत को,तुम कौन हो? तुम इस विश्व के आधार हो। सबको दिशा देने वाले तुम हो। सोचो तो सही कि आधाकल्प से जिन्होंने मानवता को दिशा दी। संसार के दर्द को दूर करने का हर संभव प्रयास किया। जनमानस को विकारों की प्रचण्ड अग्नि में जलने से बचाने के लिए धर्मनीति को जीवन का आधार बनाया। भ्रष्टाचार की आँधी में तहस–नहस हो रहे समाज को नैतिकता का पाठ पढ़ा उसे बर्बादी की खाई में गिरने से बचाया। खून से हाथ रंगने वालों को प्रेम का पाठ पढ़ा विश्व बन्धुत्व की भावना जाग्रत

की। और आज वे धर्मपितायें कहाँ हैं? क्या कर रहे हैं ? बाबा कहते हैं कि एक बार वे भी शक्ति भरने आयेंगें, तो कहाँ आयेंगें? और कब आयेंगें? और कैसे आयेंगें? साकार बाबा तो अभी है नहीं, हर धर्म में भी ब्रह्मा बाप को किसी न किसी रूप में मान्यता तो प्राप्त है ही, तो उनसे कहाँ और कब मिलेंगें? और एक बार दादी जानकी से शायद विदेशी भाई – बहनों ने क्वेश्चन पूँछा था, कि क्या धर्म स्थापक आ चुके हैं तो दादी ने कहा था कि अभी ऐसा लगता नहीं, कि वे लोग आ चुके हैं तो सोचो मेरे भाई कि उन्हें कौन लायेगा? मेरे भाई वे सब महान धर्मात्मायें यहाँ मधुबन में ही तो आयेंगें,क्योंकि यहाँ कि मिट्टी में प्रजापिता ने परमात्म प्रेम का बीज बोया है,यहाँ कि हवाओं में पावनता की सुगन्ध बह रही है,यहाँ कि तरंगों में वैराग्य का रंग घुला हुआ है,यहाँ के कण–कण से आदि पिता के तप का तेज प्रस्फुटित हो रहा है। उनको वे प्राप्तियाँ तुम्हें करानी होंगी, जिनकी उन्हें सदियों से तलाश है,उन शक्तियों का स्रोत उन्हें दिखाना है जिससे वे अपार शक्तियों को धर्म स्थापन के लिए समाहित कर सकें। उस आदि पिता से रूबरू भले न हो पायें पर उसकी पालना की विरासत का एहसास तो कराना ही होगा। उस घर में बसेरा भले न कर पायें पर आश्रय की अनुभूति तो कराना ही होगा। उन्हें लाने के लिए चाहिए एक ऐसी महान शक्ति,एक ऐसी पावन उर्जा, धधकता हुआ जज्बा,एक विशुद्ध भावना,जो सिर्फ देने का भाव जगाती हो, मेरे भाई उन्हें तुम्हें लाना है। तुम उन्हें ला सकते हो। इस महान कार्य के लिए बाबा ने तुम्हें यहाँ रखा है। आह्ववान करो उनका,बुलाओ उन्हें। पुकारो उनको, जो आने की राह बिना पते के तलाश रहे हैं। एक लम्बे समय से प्रतीक्षा में हैं। उनके इन्तजार को खत्म करने का इन्तजाम कुछ तो करो। मेरे भाई अब देर मत करो,अब समय नहीं है।

मधुबन को पहले स्वर्गाश्रम कहा जाता था, यह एक ऐसा आश्रम है जो स्वर्गीय आनन्द अभी भी कराता है और स्वर्ग में जाने का पुरूषार्थ भी कराता है। मेरे भाई सतयुगी स्वर्ग में जाना तो सभी के लिए संभव नही पर यहॉ के स्वर्ग का अनुभव तो कराया जा सकता है। जो मानवता एवं सज्जनता से बहुत दूर हैं उनके जीवन को एक बार देखो तो सही, सदियों से नर्क के दलदल में आकंठ तक डूबकर मोह में फॅसे मानव में प्यार की एक बूँद की तलाश रहे हैं, क्षणिक आवेश में मन की शान्ति के लिए बड़े–बड़े अपराध तक कर रहे हैं,न खाने वाली चीजें जो आदि मानव का भोजन मानते रहे वही समझदार बन आधुनिक टेबेल पर बैठकर नरभक्षी की तरह खा रहे हैं,आखों पर विकारों की पट्टी बॉधकर ऐसे–ऐसे पाप कर रहे हैं

जिनको सुनकर कलेजा मुँह को आ जाये। आधुनिकता के लिबास में भारतीय संस्कृति को तहस –नहस कर फैशन की आँधी में ऐसे उड़ा रहे हैं कि मर्यादा चीत्कार रही है। व्यसनों का भूत सिर पर ऐसा सवार है कि सर्वश्रेष्ठ प्राणी, जिनको अपनी ही खबर नहीं, अपना ही होश नहीं, क्या करने चले थे, क्या करने लगे है? कहाँ जाना था, कहाँ जा रहे हैं? क्या करना चाहिये था? क्या कर रहे है? कुछ पता नहीं। अनमोल जीवन को दे रहे हैं बीमारियों का घुन,लगा रहे हैं नैतिकता में आग, बढ़ा रहे हैं नित नये दंगा फसाद, घोल रहे हैं समाज में पतन का जहर,कर रहे हैं इंसानियत एवं मानवता की विनाश लीला, मेरे भाइयों इस महामारी को कौन रोकेगा? क्या तुम्हें इनकी मूर्खता व बेबसी पर रहम नहीं आता? आखिर आप क्या सोच रहे हो? पाप की बहती नदी को रोकना तो मुश्किल हो सकता है पर इसे श्रेष्ठ कर्म से परिशोधित तो अवश्य किया जा सकता है,और यह कार्य भी आपको तब करना है जबकि कोई भी इस कार्य को करना नहीं चाहता,पर ये कार्य आपको करना तो है, उनके मन पर काम करके बदलना है उनके मनों को,उनकी वृतियों को, उनके दिलों को,उनके चिन्तन को,उनके अन्तस को कुछ इस तरह परिवर्तन करना है, कि जो न चाहते हुए भी उनके मानस पटल पर ये विचार तूफान बनकर कौंधते रहे,और तब तक चैन न लेने दे, जब तक कि पूर्ण परिवर्तन न हो जाए,और तम्हारी ये नेक भावना कि वे अब और पापों का बोझा न बढ़ा, जहन्नुम की भोगना से अपने को कुछ तो बचाये और इंसानियत से ऊपर उठाकर देवत्व को प्राप्त कराने की पढ़ाई जो भगवान पढ़ाने आये हैं वो अगर न भी पढ़ पाये तो भी बच्चे होने का कुछ तो अनुभव उनको भी मिल जाये। ये शुद्ध भावना रक्त बनकर तुम्हारी धमनियों में बहने लगे और तुम्हारा ये शुद्ध भाव तुम्हारे हृदय का स्पन्दन बन जाये,यह विचार तुम्हें सोने न दे,यह संकल्प तुम्हारे पुरूषार्थ का पर्याय बन जाये। मेरे भाई ये कार्य तुम्हें सकाश से ही करना होगा, इसलिए तैयार करो अपने मन को,रिफाइन करो अपनी पवित्रता को,तेज करो अपनी चेतना को,प्रखर करो योग की ज्वाला को। हे त्रिलाकी,हे त्रिनेत्री, हे त्रिभुवन के आली औलाद तुम क्या नहीं कर सकते? जबकि सर्वशक्तिमान भाग्यविधाता साथ तुम्हारे,इसलिए उठो,आगे बढ़ो,कुछ कर दिखाओ।

ब्र0 कु0 सुमन

जानकीपुरम लखनऊ